

विष्णु संपत्-२०३६, अषाढ १६-१४, शनिवार, ता. ६-६-१९८०
पद्यनामृत-१२, १५, १८, २०. प्रपद्यन नं. २

यह पद्यनामृत है. रात्रिमें बहनोंमें बोले होंगे, वह विष्णु विया था. बाकी तो आत्माकी अनुभूति, आत्माकी अनुभूतिमेंसे वाणी निकली है. आनंदका स्वादमेंसे. अनुभूति किसको कहे? आत्माका अतीन्द्रिय आनंदका स्वाद आवे. आलाहा..! स्वाद समझे? क्या कहते हैं? स्वाद कहते हैं? आलाहा..! जैसे स्वाद-अनुभवमें यह वाणी आ गयी है. वह यहां विष्णुकर बाहर आयी है. भाषा साधारण होगी. क्योंकि बहनोंने विष्णु है. १२वां बोल, १२वां बोल.

‘जिसे द्रव्यदृष्टि प्रगट हुई...’ आलाहा..! मुझे रकमकी बात है. जिसे द्रव्य यानी वस्तु. पर्याय सिवाकी त्रिकावी चीज. क्योंकि पर्याय तो विषय करनेवाली है. और विषय है वह पर्याय नहीं. एक समयकी जो पर्याय है-दृष्टि, सम्यग्दर्शन है वह सम्यग्दर्शनका विषय नहीं है. पर्याय है न. पर्याय. सूक्ष्म बात है. सम्यग्दर्शनका विषय पूरा द्रव्य है. पूर्णानंदका नाथ प्रभु अनंत आनंद और सर्वांग वीर्य-पुरुषार्थसे भरा पडा, ऐसा जो भगवान आत्मा वह दृष्टिका (विषय है). ऐसी ‘जिसे द्रव्यदृष्टि प्रगट हुई...’ ऐसी जिसको द्रव्य यानी वस्तु त्रिकाव. इसकी दृष्टि प्रगट हुई. सूक्ष्म बात है, भाई! मुझे रकम तो यहांसे शुरू होती है. द्रव्यदृष्टि बिना सब ज्ञानपना, आचरण, किया सब संसार (है). मूल चीज सम्यग्दर्शन है. सम्यग्दर्शनका विषय ध्रुव है.

कहते हैं, ‘जिसे द्रव्यदृष्टि प्रगट हुई...’ आलाहा..! यह करना है. लोगोंको पहले यह करना है. दृष्टिका विषय भगवान पूर्णानंदका नाथ वीतरागमूर्ति आत्मा है. आत्मामें रागादि नहीं है. वह तो पर्यायमें रागादि व्यवहारनयसे है. अंतर स्वरूप है उसमें तो वीतरागता भरी है. पूर्ण वीतराग, पूर्ण आनंद, पूर्ण शांति, पूर्ण स्वच्छता, पूर्ण प्रभुता ऐसी अनंत अनंत शक्तिका भंडार है. उसकी दृष्टि हुई, ‘उसकी दृष्टि अब चैतन्यके तब पर ही लगी है.’ आलाहा..! जिसको अंतर दृष्टि हुई, वह दृष्टि तब, तब यानी तबवा, पाताव. एक समयकी पर्यायके सिवाका जो तब है वहां समझितीकी दृष्टि लगी है. आलाहा..! तब नाम तबवा. तब.. तब. पाताव.

जैसे पातालमें गहराईमें जाते हैं.

जैसे आत्मा अक समयकी पर्याय दृष्टि सम्यक्, उसका विषय पर्यायके अंदर पाताल गहराईमें द्रव्य पूरा पडा है, पर्यायके पीछे पडा है उसकी दृष्टि करना. आला..! वल 'तल पर ही लगी है.' धर्मीकी दृष्टि तल पर लगी है. पर्याय पर नहीं. आला..! कठिन काम है. 'उसमें परिणति अकमेक हो गल है.' धर्मी समकितकी चौथे गुणस्थानमें उसकी परिणति यानी पर्याय, वस्तुकी जो पर्याय है वल पर्याय द्रव्यके सन्मुज हो गल. उसमें अकमेक हो गल ऐसा कलनेमें आता है. अकमेकका अर्थ कि पर्याय जो राग पर जुकती थी, वल पर्याय स्वभावकी ओर आयी तो अकमेक लुंल ऐसा कलनेमें आता है. पर्याय और द्रव्य दोनों कभी अक नहीं लोते. आला..! गजल बात है न! पर्याय-अवस्था पर्यायपने रलती है, ध्रुव ध्रुवपने रलता है. पर्याय-अवस्था ध्रुवके उपर तिरती है. आला..! सूक्ष्म बात है, लार्ल! ... सम्यकृशन आला..!

उसकी दृष्टि तलमें लोती. समकित है पर्याय, परंतु उसकी दृष्टि तल-ध्रुव पर है. ँसलिये उसकी दृष्टि तलमें गल. उपर नहीं रली. उपरसे निकल गल. पर्यायलुद्वि ली निकल गयी. राग, पुण्य-पाप, दया-दानके विकल्पकी लुद्वि निकल गल. आला..! अंदर तल, द्रव्यदृष्टिका तल जो है.. आला..! लोकेमें तो पातालका पत्ता लगता है, यल पाताल दूसरी जलतिका है. जिसके तलमें क्षेत्रका अंत दृषलता है, ल्भावका अंत नहीं है. वल क्या कल? क्षेत्र तो शरीरप्रमाण है. परंतु ल्भाव अनंत-अनंत है. तीन कालके समयसे ली अनंतगुना आत्मामें गुण हैं. अक सेकंडके असंज्य समय जलये. जैसे तीन कालका जलतना समय है, उससे अनंतगुना अक लुवमें गुण है. आला..! जैसे तल पर (दृष्टि) गल है. समकितकी दृष्टिकी पर्याय तल पर है. अनंत गुणका अकृप ऐसा द्रव्य पर गल है. सूक्ष्म बात है, लार्ल!

'उसमें परिणति अकमेक हो गल है.' अकमेकका अर्थ यल. पर्याय और द्रव्य, सामान्य और विशेष अक नहीं हो जलते. सम्यकृशन विशेष है और द्रव्य सामान्य है. सामान्य और विशेष दो लिलकर द्रव्य है. लेकिन विशेष पर्याय सन्मुज गयी, सन्मुज, तो अकमेक लुंल ऐसा कलनेमें आता है. लकी अकमेक लोती नहीं. आला..! सूक्ष्म विषय है, प्रलु! अकमेक (कल लेकिन) पर्याय तो पर्याय है. पर्याय तो ध्रुव पर पर्याय है. वल पर्याय और ध्रुव कभी अक नहीं लोते. क्योकि पर्याय है वल उत्पाद-व्यय स्वरूप है और द्रव्य है वल ध्रुव स्वरूप है. ध्रुवमें उत्पाद-व्ययका प्रवेश नहीं. आला..! और ध्रुव उत्पाद-व्ययमें आता नहीं. समजमें आता है? लगवान! यल तो लगवानकी लार्ते है, लार्ल! आला..!

अक समयकी पर्याय-दृष्टि द्रव्य पर लगी, उसको द्रव्यके साथ वह पर्याय अकमेक हो गइ, जैसे कलनेमें आता है. जैसे कलनेमें आता है, बाकी अकमेक होती नहीं. क्यों? कि वस्तु सामान्य-विशेष है. प्रत्येक वस्तु सामान्य-विशेष (है). तो विशेष पर्याय, सामान्यमें अकमेक हो जाये तो अकेला सामान्य रह जाता है, उसका जननेवाला नहीं रहता है. आलाला..! विशेष पर्याय है. ध्रुव सामान्य त्रिकाल है. तो विशेष पर्याय द्रव्यकी दृष्टि करती है, अपनी नहीं. सूक्ष्म बात है, प्रभु! अभी तो लोग क्रियाकांडमें लगे गये हैं. तत्त्व तो बहुत दूर रह गया. आलाला..!

‘उसमें परिणति अकमेक हो गइ है. चैतन्य-तत्वमें ही सहज दृष्टि है.’ आलाला..! धर्मीकी.. सूक्ष्म पडेगा, प्रभु! अंदर चैतन्यतत्व है, चैतन्यतत्व. अक समयकी पर्यायके पीछे-अंदर जो तत्व है, उस ‘चैतन्य-तत्वमें ही सहज दृष्टि है.’ उसमें स्वाभाविक दृष्टि है. दृष्टि दुई बादमें फिरसे दृष्टि करनी पडती है, जैसे नहीं. दृष्टि वहां गइ तो अकमेक (हो गइ). आलाला..! सूक्ष्म बात है, प्रभु! आलाला..! उसमें ‘चैतन्य-तत्वमें ही सहज दृष्टि है.’

‘स्वानुभूतिके कालमें...’ अब क्या करते हैं? जब धर्मीको ध्याता, ध्यान और ध्येय तीन (भेदको) भूलकर अक अनुभवमें जब आता है, तब उसे यह चैतन्य ध्रुव और यह पर्याय, ऐसी दो बात नहीं रहती. अनुभवमें लीन हो जाता है. लेकिन बहुत थोड़ी देरके लिये. चौथे-पांचवेमें कोई-कोई बार. छठे और सातवेमें तो हजारों बार, अंतर्मुहूर्तमें छठे-सातवेमें हजारों बार निर्विकल्प (हो जाते हैं). अक अंतर्मुहूर्तमें. अंतरकी दशाकी बात है, भगवान! आलाला..!

यहां करते हैं, ‘स्वानुभूतिके कालमें...’ क्या कला? ध्यानके कालमें दृष्टिका विषय जो द्रव्य-वस्तु है, उसके ध्यानमें जब लगे गया, तब पर्याय परसे लक्ष्य छूट गया और पर्याय द्रव्य पर जुक गइ, उस कालमें भी दृष्टि तो तत्व पर ही है. स्वानुभूतिमें भी दृष्टि तो द्रव्य पर ही है और ‘और बाहर उपयोग हो तब भी...’ क्या कला? विकल्प आया है. शुभाशुभ विकल्प भी आता है. शुभ और अशुभ राग समकितिको आता है. तो भी उसकी दृष्टि चैतन्य पर है, दृष्टि द्रव्य पर है.

मुमुक्षु :- ..

उत्तर :- द्रव्य पर दृष्टि है. विकल्प चाहे तो शुभाशुभ हो, लेकिन दृष्टिमें तो भगवान ध्रुव ही वर्तता है. दृष्टिमें विकल्प नहीं है. दृष्टिका विषय विकल्प नहीं. आलाला..! विकल्प नाम राग. आलाला..! श्लोक यह आ गया. किसिने लिखा है, यह पढना. किसिने लिखा है कि यह पढना. यीमनभाईने लिखा है? किसने लिखा

है? आया है. ईसमेंसे यह बोल पढना. किसीका नाम नहीं है. क्या कहते हैं? प्रभु!

जिसकी दृष्टि प्रभु पर गई.. आलाला..! उसको अनुभवकालमें भी दृष्टि वहां है और अनुभव न हो और विकल्प आया, जाने-पीनेका, चलने-बोलनेका, अरे..! लडाईका (विकल्प आया). बालुबल और भरत यक्षवर्ती, दोनों समकित्ती. दोनों लडाई करते थे. फिर भी दृष्टि ध्रुव पर थी. अरे..! प्रभु! आलाला..! दोनों लडाई करते थे, दोनों समकित्ती. दोनों उस भवमें मोक्ष जानेवाले. आलाला..! लडाईके वक्त राग-द्वेष आता था, लेकिन दृष्टि तो ध्रुव पर थी. त्रिकावी भगवान सच्चिदानंद प्रभु सत् नित्य रहनेवाला चिदानंद ज्ञान और आनंदका सर्वांग दरिया, सर्वांग समुद्र. ऐसा जो प्रभु आत्मा, लडाईके वक्त भी ध्येय-दृष्टि द्रव्य परसे नहीं हटती. आलाला..! समझमें आता है? आलाला..! यह तो मुद्देकी बात है. दृष्टि चले तो अनुभवमें हो तो भी दृष्टि ध्रुव पर है. अपने ध्यानमें, ध्याता-ध्यानका (विकल्प) छूटकर आनंदके स्वादमें आया हो और निर्विकल्प हो, यौथे गुणस्थानमें भी निर्विकल्प होता है, तब निर्विकल्पताके कालमें दृष्टि तो ध्रुव पर है. पर्यायमें निर्विकल्प हुआ. और विकल्प आया तो भी दृष्टि तो ध्रुव पर है. विकल्प आया, अरे..! लडाईका आया. भरत यक्षवर्ती समकित्ती, लद लजर स्त्रीका भोग. लद लजर. फिर भी दृष्टि ध्रुव पर थी.

मुमुक्षु :- दृष्टि माने ..

उत्तर :- सम्यग्दृष्टि.

मुमुक्षु :- दृष्टि यानी यक्षु?

उत्तर :- यक्षु बिनाका. समकित्ती यक्षु. पहले तो वह कदा था. दृष्टि, द्रव्यको कबुल करे वह दृष्टि. यह आंभमें क्या है? धूल है. यह आंभकी पलक जलकती है उसे आत्मा नहीं कर सकता. आलाला..! आत्मा अपने सिवा अनंत रजकण है, अक रजकणको भी बदल नहीं सकता. शास्त्रमें तो वहां तक पाठ है, समयसारमें तीसरी गाथा. अक द्रव्य दूसरे द्रव्यको चुंबता नहीं, स्पर्श नहीं करता, छूता नहीं. समयसार, तीसरी गाथा. 'एयत्तणिच्छयगदो'.

एयत्तणिच्छयगदो समओ सव्वत्थ सुंदरो लोगे।

बंधकहा एयत्ते तेण विसंवादिणी होदि।।३।।

ईस गाथाकी टीकामें अमृतचंद्राचार्य कहते हैं कि कोई भी आत्मा, कोई भी परमाणुको कभी छूता नहीं. कर्म आत्माको (छूता नहीं). आलाला..! आत्माको कर्म छूता नहीं और कर्मको आत्मा छूता नहीं. अरे..रे..! यह बात. वस्तुका स्वरूप यह है. बाकी

तो सब व्यवहारकी बात है, परमार्थ यह है. अेक तत्त्व दूसरे तत्त्वको (छूता नहीं). यह अंगूली है वह कागजको छूती है ऐसा नहीं. क्योंकि उसके परमाणुका और ँस परमाणुमें अेकदूसरेमें अभाव है. आलाला..! सूक्ष्म बात, प्रभु! उसमें यहां कलते हैं कि उपयोग जब स्वानुभूतिमें हो. समकितिका उपयोग ध्यानमें आनंदके वेदनमें अकेला हो, अस. विकल्प नहीं है, निर्विकल्प (है). उस कालमें भी दृष्टि ध्रुव पर है. और विकल्प आया, जानेका-पीनेका, चलनेका, तो भी दृष्टि तो ध्रुव पर है. लडाईका विकल्प आया तो भी दृष्टि ध्रुव पर है. श्रेणिक राजा कैदमें माथा झोडकर मर गया. दृष्टि ध्रुव पर है. समजमें आया? अंदर सम्यग्दर्शनका विषय ध्रुवको पकड लिया है. आलाला..!

सूक्ष्म बात है, प्रभु! यह कोई कलानी नहीं है. यह तो परमात्मा तीन लोकके नाथने कला है. बलन वहां थे. सीमंधर भगवानके पास थे, वहांसे आये हैं. थोडी सूक्ष्म बात है. थोडी माया हो गयी थी ँसलिये स्त्री हो गये. यह सब उनके वचन हैं. अंदरसे आया हुआ. वहांका अंदर अनुभवमें आया था, वह विभ लिया गया है. क्या कला?

‘स्वानुभूतिके कालमें...’ स्वानुभूतिके कालमें समजे? ध्यान. आत्माका ध्यान लग गया हो. भवे यौथे-पांचवेमें हो. सातवेमें तो होता ही है. छठे-सातवेंमें तो ध्यानमें ही होते हैं. लेकिन यौथे-पांचवेमें भी कभी-कभी स्वानुभव निर्विकल्प उपयोग होता है. उस कालमें भी दृष्टि तो ध्रुव पर है, सम्यग्दर्शन तो ध्रुव पर है. और **‘बाहर उपयोग हो तब भी तब परसे दृष्टि नहीं हटती,...’** आलाला..! दृष्टिका विषय ध्रुव है, ध्रुव. कठिन बात है. **‘भूदत्थमस्सिदो खलु’**. ११वीं गाथा, समयसार. भूतार्थ नाम त्रिकाल जे चीज है, उसके आश्रयसे सम्यग्दर्शन होता है. दूसरा कोई उपाय तीन कालमें नहीं है. आलाला..! **‘भूदत्थमस्सिदो’** भूतार्थ नाम त्रिकालीका आश्रय करनेसे, **‘भूदत्थमस्सिदो खलु सम्मादिट्ठी हवदि जीवो’**. तबसे समकितदृष्टि उत्पन्न होती है. मूल चीज यह है. तबसे दृष्टि जे ध्रुव पर गयी, बाहरमें विकल्प आये तो भी दृष्टि तो ध्रुव पर ही है. आलाला..!

अेक छोटी लडकी हो या लडका हो. उसकी मांके साथ हो. और बाहर बहुत लोग हो. उसकी मां दूर चली गयी. लडकी बिछड गयी. यह तो प्रत्यक्ष देखा था. उस लडकीको पूछते थे, तू कहांकी है? मेरी मां. तेरा नाम क्या? मेरी मां. मेरी मां.. मेरी मां.. अेक ही रटन. तेरी सहेली कौन? मेरी मां. तेरी गली कौन-सी? पहचान दे तो वहां छोड दे. तेरी गल्ली कौन-सी? मेरी मां. अेक ही बात, मेरी

मां.. मेरी मां. इसके सिवा दूसरा कुछ नहीं.

ऐसे समकित्तिको अपने सम्यग्दर्शनमें ध्रुवके सिवा दृष्टि कहीं बटवती नहीं. समझमें आया? आलाला..! 'स्वानुभूतिके कालमें या बाहर उपयोग हो तब भी तब परसे दृष्टि नहीं हटती,...' तब अर्थात् ध्रुव. उत्पाद-व्यय-ध्रुवयुक्तं सत्. उत्पाद-व्यय है वह पर्याय है, ध्रुव है वह द्रव्य है. द्रव्यके दो प्रकार. एक प्रमाणका द्रव्य. त्रिकावी द्रव्य और पर्याय मिलकर प्रमाणका द्रव्य है. और निश्चयनयका द्रव्य-पर्यायको छोड़कर जो चीज रही वह निश्चयनयका विषय है. सूक्ष्म बात है, भाई! क्या कहा? झिसे.

एक समयकी पर्याय है, उसकी दृष्टि द्रव्य पर ही है. पर्यायकी दृष्टि पर्याय पर नहीं है. समकित्तिकी दृष्टि समकित पर नहीं है. आलाला..! उसकी दृष्टि अंदर ध्रुव पर है. बापू! कभी प्रयत्न किया नहीं. बाह्य क्रियाकांडकी प्रवृत्ति आडे कुरसद नहीं मिलती. आलाला..! यह भगवान अंदर निर्विकल्प भगवान विराजता है. उस पर जो दृष्टि दुई, उसका विकल्प बाहर आवे तो भी दृष्टि हटती नहीं. आलाला..!

अरे..! भरत यक्षवर्ती. ८६ हज़र श्रीका भोग. ८६ हज़र श्रीका भोग, झि भी समकित्ती-क्षाधिक समकित्ती. आलाला..! भोगके वक्त भी दृष्टि ध्रुव पर है. चाले संसारके भोगादि हो, अस्थिरता हो जाये, लेकिन दृष्टि तो अंदर ध्रुव पर पडी है. समझमें आया? विषय थोडा सूक्ष्म है. सादी भाषामें तो कहते हैं. आला..! दुनियाको कहां आत्माकी पडी है. मैं कहा जाऊंगा, यह देल छोड़कर? देल तो छोटेगा, आत्मा तो नित्य है. यहांसे कहां जायेगा? कहां जायेगा इस चौरासीके अवतारमें? आला..! कभी उसने विचार नहीं किया है कि यह देल तो छोटेगा और आत्मा तो है. आत्मा तो त्रिकाल है. यहां-से कोई दूसरे भवमें तो जायेगा. इस भवके तो थोडे साल रहे. ५०-५०, ६० निकल गये, उसे ५०-६० और नहीं निकलेंगे. पंडितजी! ५० निकलेंगे? आलाला..! यहांसे परलोकमें कहीं जाना है. जहां कोई साधन नहीं है, बाहरमें कोई पहचानवाला नहीं है.

मुमुक्षु :- वहां कोई रिश्तेदार नहीं है?

उत्तर :- वहां कोई रिश्तेदार भी नहीं है और प्रिय भी नहीं है. जंगलमें सुवर होकर जन्म ले. कौआ होकर जन्म ले, चिंटी होकर अवतार ले. आलाला..! प्रभु! तुने विचार नहीं किया है. आला..! पीछले अनंत भवमें कहां-कहां भवमें दुःख भोगे, उसे याद नहीं किया है. वादिराज मुनि.. ये स्तोत्र है न? अेकीभाव स्तोत्र. उसमें आचार्य कहते हैं, मैं पीछले भवके दुःखोंको याद करता हूं.. ये तो मुनि हैं, तीन कथायका अभाव है, आनंद है. लेकिन कहते हैं कि मैं जब भूतकालका

विचार करता हूँ, नर्कक दुःख याद करनेपर आत्मामें धाव लगता है। जैसा पाठ है। समझमें आया? मुनि, हां! तीन कथायका अभाव है, भावविंगी जिनको गणधर नमस्कार करे। मुनिको तो गणधर (नमस्कार करते हैं)। एमो लोअे सव्व साहूणुंमें सब आ जाते हैं न? छोटे लो उसको वंदन नहीं करते, लेकिन एमो लोअे सव्व साहूणुंमें सब आ जाते हैं। सब साधु, सव्वे, हां! साधु यानी द्रव्यविंगी भी नहीं और अन्यके साधु भी नहीं। कोर्र जैसा कहता है कि, एमो लोअे सव्व साहूणुंमें सब साधु (आ जाते हैं)। नहीं, नहीं। जैन परमेश्वरने कहे तत्त्वका अनुभव, दृष्टि लो, उन्हींने कहा जैसे अनुभवका चारित्र लो उसे जैन साधु कलनेमें आता है। बाकी कोर्र साधु-बाधु है नहीं।

यहां कलते हैं, 'दृष्टि बाहर जाती ही नहीं।' आलाहा..! लोअेके समय ली दृष्टि तो ध्रुव पर पडी है। ये कोर्र बात है! अेक बात तो जैसी है। भरतेश वैभव पुस्तक है न? देभा है कि नहीं? भरतेश वैभव। यहां सब पुस्तक है, लमने तो सब देजे हैं। यहां तो लज्जरो पुस्तक देजे हैं न। भरतेश वैभवमें तो अेक बात जैसी आथी है कि उसने विषय लिया। विषय लेकर जहां नीचे उतरकर बैठते हैं, निर्विकल्प ध्यान लो जाता है। क्योकि दृष्टि ध्रुव पर थी और अस्थिरताका राग आया था। उसे वे जानते थे, कर्ता-लर्ता नहीं थे। समकित्तिको राग आता है उसका वल कर्ता-लर्ता नहीं है। और वल आनेके बाद तुरंत ध्यानमें उतर गये तो निर्विकल्प लो गये। थोथे गुणस्थानमें अभी संसारमें (जैसी स्थिति है)। भरतेश वैभवमें है।

यहां कलना क्या है? कि उतनी अस्थिरता थी तो ली नीचे उतरे और ध्यानमें निर्विकल्प लो गये। ध्याता, ध्यान और ध्येय तीनों लूल गये। अतीन्द्रिय आनंदका स्वाद, अतीन्द्रिय आनंदका स्वाद (लेते हैं)। आलाहा..! उसका नाम सम्यज्दर्शन और उसका नाम धर्मकी शुरुआत है। आलाहा..! जैसी बात है, लगवान! लोअे याहे जैसे करे, मनाये, लेकिन ँस वस्तुके बिना कभी लवलमण कल लो जैसा नहीं है। लवका नाश लो जैसा नहीं है। आलाहा..!

'दृष्टि बाहर जाती ही नहीं। ज्ञानी जैतन्यके पातालमें पलुंच गये हैं;...' धर्माजिव जैतन्यके पातालमें (पलुंच गये हैं)। अेक समयकी पर्यायके पीछे गलराधमें जे ध्रुव है वल जैतन्यका पाताल है। धर्माजिव अपनी पर्यायमें जैतन्यतलमें-पातालमें पलुंच गये हैं। जैतन्यतल पूरा कितना है उसका उसको वेदन लो गया है। आलाहा..! थोडा सूक्ष्म है। यल शब्द सूक्ष्म है। 'गलरी-गलरी गुकामें...' आलाहा..! जैसे गलरी-गलरी गुका लोती है, वैसे आत्मा अपनी पर्यायमें, सम्यज्दृष्टिकी पर्यायमें गलरी-

गहरी यानी जैसे कोई गहरी गुफा हो, वैसे अंदरमें चले जाते हैं. ध्रुवमें उसकी दृष्टि जाती है. ध्रुवके सिवा दूसरी चीजका ध्यान (नहीं) होता. दृष्टिके विषयमें तो अंक ही रहता है-द्रव्य. भगवान त्रिलोकनाथ परमात्मा.. आलाला..!

‘गहरी-गहरी गुफामें, बहुत गहराई तक पहुंच गये हैं;...’ आलाला..! सम्यग्दृष्टि, सच्ची दृष्टि, अनुभव दृष्टि गहराईमें, अकस्म गहरे-गहरे गहराईमें. पर्यायके पीछे जो स्वयं परमात्मा विराजता है-निज आत्मा, वहां दृष्टि पहुंच गई है. आलाला..! ये तो बहन बोले थे. कभी-कभी थोडा-थोडा बोले थे, उसे विजय लिया. नहीं तो वह ध्यानमें बहुत रहती है. ‘गहरी-गहरी गुफामें, बहुत गहराई तक पहुंच गये हैं;...’ बहुत गहराईमें अंदर चले गये हैं. अपनी वर्तमान पर्यायको ध्रुवमें लगा दी. आलाला..! पर्याय असंख्य प्रदेश पर है. पर्याय उपर-उपर यानी शरीर तो नहीं, लेकिन उपर-उपर प्रदेश पर पर्याय जैसे नहीं, पर्याय तो अंदर जो प्रदेश है न, अंदर, उसमें पर्याय है. पर्याय असंख्य प्रदेश पर प्रत्येक (प्रदेश) पर है. क्या कहा? पर्याय, इस शरीरमें आत्मा जितनेमें दिखता है, उसमें उपर-उपर है उतनी आत्माकी पर्याय नहीं है. आत्मा नहीं, लेकिन आत्माके उपर है उतनी पर्याय नहीं है. उसके असंख्य प्रदेश है, उस प्रदेशका जो दल है, वहां प्रदेश-प्रदेश पर पर्याय है. आलाला..! समझमें आया? प्रदेश-प्रदेश पर पर्याय, असंख्य प्रदेशमें घुस जाती है, अंदर अंकाकार (हो जाती है), तब उसको विकल्प नहीं रहता. विकल्प आता है तब उसको जानते हैं, कर्ता नहीं होते. समझमें आया?

‘साधनाकी सलज दशा साधी लुई है.’ धर्मीने तो साधनाकी सलज दशा (साधी है). साधन यह है. अंतर्मुख आनंदमें जुकाव, वह साधना. बाकी बाहरकी क्रियाकांडको साधना कहे, बापू! उसमें कुछ नहीं है. समझमें आया? यहां तो साधनाकी सलज स्वभाविक दशा साधनाकी यह है. आलाला..! अंतर गुफामें अंदर अपनी पर्यायसे उतरना वह साधनाकी दशा है. अरे.. प्रभु! मार्ग वीतरागका.. आलाला..! अनंत तीर्थकर यह कह गये हैं. १५वां विभा है.

तीर्थकरदेवकी दिव्यध्वनि जो कि १५ है उसे भी ऐसी उपमा दी है. अमृतवाणीकी मीठास देजकर द्राक्षें शरमाकर वनवासमें चली गई और ईक्षु अलिमान छोडकर कोल्हूमें पिल गया! ऐसी तो जिनेन्द्रवाणीकी महिमा गायी है; फिर जिनेन्द्रके चैतन्यकी महिमाका तो क्या कहना!! १५.

‘तीर्थंकरदेवकी दिव्यध्वनि जो कि जड है...’ १५वां बोल. ‘तीर्थंकरदेवकी दिव्यध्वनि जो कि जड है उसे भी कैसी उपमा दी है! अमृतवाणीकी मिठास...’ प्रभु! आपकी वाणीकी मिठास ‘देभकर द्राक्षें शरमाकर वनवासमें चली गई...’ द्राक्ष.. द्राक्ष. द्राक्षकी मिठास, तेरी वाणीकी मिठास सुनकर द्राक्ष वनमें चली गई. तेरी मिठास वीतरागकी वाणी. सिंह और बाघ जंगलमेंसे कावे नाग प्रवचनमें आते हैं. जैसे ही सुनते हैं, स्थिर हो जाते हैं. सर्पके साथ यूँ बैठा हो. यूँको भय नहीं है और यह उसे मारे नहीं. बिछीका बय्या (बैठा हो). वर्तमान भगवान समवसरणमें (विराजते हैं).

यहां कहते हैं कि ‘तीर्थंकरदेवकी दिव्यध्वनि जो कि जड है उसे भी कैसी उपमा दी है! अमृतवाणीकी मिठास देभकर द्राक्षें शरमाकर वनवासमें चली गई...’ आला..! उपमा दी है. द्राक्षकी मिठास, भगवानकी वाणीकी मिठासके आगे शरमा गई. वनमें चली गई. ऐसी बात है. अमृत ऊरता है. आता है न? भगवानकी वाणीमें अमृत ऊरता है, अमृत ऊरता है. है तो वाणी. वाणीके कर्ता नहीं है. भगवान वाणीके कर्ता नहीं है. वाणी जडकी पर्याय है. जडकी पर्यायको आत्मा करता नहीं. लेकिन वाणीमें एतनी ताकत है कि जगतो मिठास उत्पन्न हो और स्वपरप्रकाशक ज़हिर करे, स्वपरप्रकाशक ज़हिर करे. आला..! वाणीमें एतनी ताकत है. तो फिर प्रभुकी चैतन्यकी ताकतकी क्या बात करनी!!

‘एक्षु अभिमान छोडकर...’ एक्षु यानी गत्रा. गत्रा-शेरडी. वह ‘कोल्डूमें पिल गया!’ भगवानकी वाणीकी मिठास देभकर.. यह तो उपमा दी है. एक्षि पिल गया. किसमें? कोल्डूमें. कोल्डूमें पिल गया. भगवानकी मिठासके आगे शरम आ गई, ऐसा कहते हैं. आला..! ‘ऐसी तो ज़िनेन्द्रवाणीकी महिमा गाथी है; फिर ज़िनेन्द्रदेवके चैतन्यकी महिमाका तो क्या कहना!!’ आला..! वाणीमें एतनी मिठास कि द्राक्षें (वनवासमें चली गई). गत्रा कोल्डूमें पिल गया. प्रभुके आत्माकी क्या बात करनी! आला..! १८. किसीने लिखकर रखा है.

दृष्टि द्रव्य पर रचना है. विकल्प आये परंतु दृष्टि ओक द्रव्य पर है. जिस प्रकार पतंग आकाशमें उडती हो परंतु डोर हाथमें होती है, उसी प्रकार ‘चैतन्य हूं’ यह डोर हाथमें रचना. विकल्प आये, परंतु चैतन्यतत्त्व सो मैं हूं-ऐसा बारंबार अभ्यास करनेसे दृढता होती है. १८.

‘दृष्टि द्रव्य पर रचना है.’ है? धर्मीको,.. धर्म उसको होता है कि जिसकी दृष्टि द्रव्य पर पडी है. आलाहा..!

मुमुक्षु :- दृष्टि अर्थात् क्या?

उत्तर :- कला न. प्रतीत, मान्यता. अनुभवमें यह वस्तु यही है, जैसी प्रतीति उसका नाम सम्यग्दृष्टि. सम्यग्दर्शनकी बात चलती है. आलाहा..! वह बात कठिन है, बापू! सम्यग्दर्शन के बिना ज्ञान भी गूँठा और उसके बिना क्रिया-व्रिया चारित्र नहीं है. चारित्र है नहीं, सम्यग्दर्शनके बिना. आला..हा..!

यहां कहते हैं, कौन-सा है? १८. ‘दृष्टि द्रव्य पर रचना है. विकल्प आये...’ राग आये शुभ-अशुभ दोनों, समकित्तीको-ज्ञानीको. परंतु आत्माके आनंदके स्वादके आगे उस शुभ-अशुभरागकी मिठास आती नहीं. स्वामी होता नहीं, कर्ता होता नहीं. क्या कला? समकित्ती गृहस्थाश्रममें हो, भोग हो, लडाई हो, लेकिन दृष्टि अंतर पडी है वह स्वादको भूलता नहीं. उस वक्त भी आनंदका स्वाद आनंद है उसका अनुभव है. आलाहा..! सूक्ष्म बात, भाई! जबसे सम्यग्दर्शन प्रगट हुआ तबसे आनंदकी धारा तो रहती ही है. आलाहा..! अतीन्द्रिय आनंद, हां! जिवमें अतीन्द्रिय आनंद पडा है.

‘दृष्टि द्रव्य पर रचना है. विकल्प आये परंतु दृष्टि अेक द्रव्य पर है. जिस प्रकार पतंग आकाशमें उडती है...’ पतंग आकाशमें (उडती है). ‘परंतु डोर हाथमें होती है,...’ डोर हाथमें है. जैसे समकित्तीको चाहे जितने भी विकल्प आये, लेकिन डोर हाथमें ध्रुव है. दृष्टिमें ध्रुव पडा है. आलाहा..! समजमें आया? पतंग होती है न पतंग? पतंग उडती है, कहीं भी चली जाये. डोर हाथमें है. आलाहा..! जैसे समकित्ती राग-द्वेष आदिमें आता है, लेकिन डोर हाथमें है-ध्रुव हाथमें है. ध्रुवमेंसे दृष्टि उटती नहीं. आलाहा..! यह मुद्देकी बात है, प्रभु! ये तो बहन रातको बोले थे, बहनोंने विभ्र किया था ईसलिये बाहर आ गया. नहीं तो आये नहीं. नहीं आये है? नहीं आये हैं.

‘पतंग आकाशमें उडती है परंतु डोर हाथमें होती है, उसी प्रकार ‘चैतन्य हूं’ यह डोर हाथमें रचना.’ आलाहा..! मैं तो ज्ञाता-दृष्टा हूं. ज्ञान और दर्शनसे भरा पडा धोकडा... धोकडाको क्या कहते हैं? इँका बोरा. बडा बोरा. जैसे मैं तो अनंत आनंदका बडा बोरा हूं. आला..! अतीन्द्रिय आनंद भरा है. शक्रेन्द्रके ईन्द्रके सुभ ऊपर है. आत्माका सुभ अमृत है. आलाहा..! राजा, महाराजा और कोडापति, अरबोपति सब दुःभी है. रागके कारण दुःभी है, अल्प भी सुभी नहीं है. आलाहा..!

मुमुक्षु :- पैसा है उतना तो सुभी है.

उत्तर :- दुःखी (है). पैसा परिग्रह है. वह परिग्रह मेरा, वह मिथ्यात्व है. अभी हम आड़िकामें गये थे न? आड़िकामें गये थे न. २६ दिन रहे थे. गांवमें ६० लाखकी बस्ती है. एक लाख मोटर, ४५० कोडपति, ४५० कोडपति और १५ अरबपति. सब सुनने आते थे. सुनते थे. हमे क्या? उनका बहुत आग्रह था और यहांके परिचित थे. २५ लाखका मंदिर बनानेवाले हैं. २५ लाखका मंदिर, टिंगंबर मंदिर. भगवानके बाढ़ नहीं हुआ है. ६० लाख ठंके लुओ. पैसे तो यहां बहुत आते हैं. लेकिन उसे कला, तुम ६० लाख या २५ लाख भर्ष करो ठंसविये धर्म हो जाये, ऐसा है नहीं. आलाला..! और वह किया भी आत्मा कर सके, ऐसा भी नहीं है. आलाला..! समझमें आया? किया कर सके नहीं, लेकिन क्रियामें जो भाव है वह शुभ है, धर्म नहीं है. कोड रुपया, पांच कोड मंदिरमें भर्ष किये ठंसविये धर्म हो गया, बिलकूल धर्म नहीं है, थोडा-सा भी नहीं है. शुभभाव है. आलाला..!

मुमुक्षु :- वह सब आपका प्रताप था.

उत्तर :- यह वस्तु तो भगवानके घरकी है. समयसार, प्रवचनसार, नियमसार गजब बातें हैं! संस्कार वहांके थे, वहांके संस्कार थे. आलाला..!

‘विकल्प आर्ये, परंतु चैतन्यतत्त्व सो मैं हूं-ऐसा बारंबार अभ्यास करनेसे दृढता होती है.’ १८वां बोल. बारंबार अभ्यास करनेसे दृढता होती है. आलाला..! १९वां लेते हैं. १९.

ज्ञानीके अभिप्रायमें राग है वह जहर है, काला सांप है. अभी आसक्तिके कारण ज्ञानी थोडे बाहर जडे हैं, राग है, परंतु अभिप्रायमें काला सांप लगता है. ज्ञानी विभावके नीच जडे होने पर भी विभावसे पृथक हैं-न्यारे हैं. १९.

‘ज्ञानीके अभिप्रायमें राग है वह जहर है, काला सांप है.’ धर्मी समकितदृष्टिको आत्माके आनंदके स्वादके आगे जो राग आता है, वह काला सांप लगता है, जहर है. दुनियाको कहां पडी है और कहां रजडती है, कुछ मावूम ही नहीं. कमाना और दो-पांच-पचास लाख कमा लिया तो हो गया, मानो.. ओहो..ओ..! आत्मा यहांसे

देह छोड़कर कहां जायेगा? कोई साथमें है या नहीं? दरकार ही कहां है? व्यापार, धंधा, स्त्री पुत्र. आलाला..! यहां तो परमात्मा कहेते हैं, वल यहां कला.

‘ज्ञानीके अभिप्रायमें राग है वल जहर है,....’ आलाला..! शुभराग है न. आत्मा आनंद है न. आत्मा आनंद है न. तो आनंदसे विपरीत अवस्था राग है और राग जहर है. आला..! कठिन बात है, भाई! शुभराग करते-करते लोगा, असा माननेवालेकी दृष्टिमें मिथ्यात्व है. शुभराग दुःख है. दुःख करते-करते समकिलत यानी सुख लोगा. समकित यानी सुख-अतीन्द्रिय आनंद और शुभराग अर्थात् दुःख. सूक्ष्म बात पडेगी, प्रभु! दुःख करते-करते सुखकी प्राप्ति लोगी, जहर पीते-पीते अमृतकी डकार आयेगी. आलाला..! असा लोता नहीं. अज्ञानी मानता है कि शुभक्रिया करते-करते आगे बढ जायेंगे. जबतक मिथ्यादृष्टि है, तबतक जितने भी शुभभाव लो, नौवीं त्रैवेयक यवा जाये, वलांसे भी नीचे गिरता है. नौवीं त्रैवेयक. ग्रीवा.. ग्रीवा. चौदह ब्रह्मांड पुरुषाकार है. उसकी जो ग्रीवा है, उस ग्रीवाके स्थानमें नौ भूमि है. वलां अनंत बार जन्म लिया. शुक्लवेश्या, द्विगंबर साधु वस्त्रके टूकडेसे रहित, ४६ दोषरहित आलार, असा क्रिया कोडो पूर्व की, लेकिन वल समकित नहीं है. आलाला..! आतमज्ञान बिना.. एल ढालामें कला नहीं? ‘मुनिप्रत धार अनंत बैर त्रैवेयक उपजायो, पै आतमज्ञान बिन लेश सुख न पायो.’ पंच मलाप्रतके परिणाम दुःख है, आस्रव है. कडक लगेगा, भाई! नये आदमीने कभी सुना नहीं लो, क्या चीज है, क्या मार्ग है. असे ली अंध लोकर (यलते हैं). आलाला..!

यहां कहेते हैं, ‘अभी आसक्तिके कारण ज्ञानी थोडे बालर भडे हैं,....’ धर्मीको अस्थिरताकी आसक्ति रहती है, चारित्रदोष है तो दोषके कारण थोडे बालर आते हैं. लेकिन जानते हैं कि वल दुःखरूप है, वल मेरी चीज नहीं है. आलाला..! ‘परंतु अभिप्रायमें काला सांप लगता है.’ है? शुभाशुभभाव आवे, ‘परंतु अभिप्रायमें काला सांप लगता है. ज्ञानी विभावके बीच भडे लोने पर भी...’ आलाला..! अपना निज स्वरूप भगवान परमानंदकी मूर्ति सर्वांग आनंद, उसकी अनुभवकी दृष्टि लुई तो वल विभाव अर्थात् विकारके बीचमें लो तो भी उसे आनंद छूटता नहीं. विभाव है उतना दुःख लोता है. पहली नर्कमें अभी श्रेणिक राजा है. ८४ लजार वर्षकी स्थिति है. तीर्थकर गोत्र बांधते हैं, अभी बांधते हैं, वलां भी बांधते हैं. क्षायिक समकित है और बांधते हैं. लेकिन अभी जितना कषाय है उतना दुःख है. संयोगका (दुःख) नहीं. वलां अत्रि आदिका संयोग है उस संयोगको छूते नहीं. उस पर दृष्टि जाती है कि यल... उसका वेदन है. कषायका वेदन है, वेदन परसंयोगका

નહીં છે. આહાહા..! નકકે દુઃખકા વર્ણન કરતે તબ (ઐસા કહે), પરમાધામી ઐસા કરે, વૈસા કરે. લેકિન એક દ્રવ્ય દૂસરે દ્રવ્યકો છૂતા નહીં. કરે ક્યા? અભિમાન કરે. આહાહા..!

યહાં કહતે હૈં.. આહાહા..! 'જ્ઞાની વિભાવકે બીચ ખડે હોને પર ભી વિભાવસે પૃથક હૈં...' આહાહા..! માતા પર નજર ઓર સ્ત્રી પર નજર જાયે, ઉસમેં ફક હૈ. માતા પર નજર જાતી હૈ તો, મેરી માં હૈ. વહ સ્ત્રી હૈ. ઉસ પ્રકાર સમકિતીકી નજર આત્મા પર હૈ. મિથ્યાદષ્ટિકી નજર પર્યાય એવં રાગ પર હૈ. આહાહા..! બહુત ફક. ક્યા કરના? એક ઓર ઘંઘા કરકે.. આહાહા..! વહ પંદ્રહ અરબવાલા હુઆ. કિતને લાખ? એક સાલમેં કિતને લાખ? આહા..! પંદ્રહ અરબ કિસે કહે? ધૂલ હૈ, મૈને તો કહા, દુઃખી હૈ. ઉસમેં સુખ નહીં હૈ. જબતક આત્મજ્ઞાન નહીં હો, તબતક તુમ દુઃખી હો. આહાહા..! પંડિતજીને ઐસા લિખા હૈ, હુકમચંદજીને, પૈસા આતા હૈ પુણ્યસે, લેકિન પૈસા પાપ હૈ. પરિગ્રહ હૈ. આહાહા..! દસલક્ષણમેં આયા હૈ. પૈસા હૈ પૂર્વ પુણ્યકે કારણ, પૂર્વ પુણ્યકે કારણ મિલે. લેકિન મિલા હૈ વહ પાપ હૈ. પૈસેવાલા પાપી હૈ.

મુમુક્ષુ :- પૈસેકે બિના કામ નહીં ચલતા.

ઉત્તર :- એક દ્રવ્યમેં દૂસરે દ્રવ્યકા અભાવ હૈ. એક આત્મા લો. અપનેમેં અસ્તિ હૈ ઓર અનંત અનંત પદાર્થકી ઉસમેં નાસ્તિ હૈ. અનંતકી નાસ્તિરૂપ ભી અસ્તિ હૈ. પરકો તો છૂતા ભી નહીં. આહાહા..! યહ અંગૂલી ઈસ અંગૂલીકો છૂતી નહીં. અંદર ફક હૈ, દોનોકે બીચ અભાવ હૈ. માર્ગ સૂક્ષ્મ હૈ, ભાઈ! આહા..!

મુમુક્ષુ :- નયા માર્ગ હૈ.

ઉત્તર :- ખરા માર્ગ યહ હૈ.

મુમુક્ષુ :- નહીં, નહીં, નયા.. નયા માર્ગ હૈ.

ઉત્તર :- નયા નહીં હૈ, અનાદિકા યહ માર્ગ હૈ. ૨૦વાં.

મુજે કુછ નહીં ચાહિયે, કિસી પરપદાર્થકી લાલસા નહીં હૈ, આત્મા હી ચાહિયે-ઐસી તીવ્ર ઉત્સુકતા જિસે હો ઉસે માર્ગ મિલતા હૈ. અંતરમેં ચૈતન્યબ્રહ્મિ હૈ તત્સંબંધી વિકલ્પમેં ભી વહ નહીં રુકતા. ઐસા નિસ્પૃહ હો જાતા હૈ કિ મુજે અપના અસ્તિત્વ હી ચાહિયે.-ઐસી અંતરમેં જાનેકી તીવ્ર ઉત્સુકતા જાગે તો આત્મા પ્રગટ હો, પ્રાપ્ત હો. ૨૦.

‘मुझे कुछ नहीं थालिये...’ मुझे आत्मा थालिये, ऐसी लगन-लगन लगनी थालिये. मुझे कुछ नहीं थालिये. अक आत्मा मेरी थीज थालिये. है न? २०वां. ‘किसी परपदार्थकी वावसा नहीं है, आत्मा ही थालिये...’ आलाला..! अंतर लगनी लगे. आत्मा ही थालिये, ‘ऐसी तीव्र उत्सुकता जिसे हो उसे मार्ग भिलता है.’ उसे मार्ग भिलता है. विशेष २१में आयेगा.. आज पूरा हो गया. ‘अंतरमें चैतन्यऋद्धि है तत्संबंधी विकल्पमें ली वल नहीं रुकता.’ अपनेमें आनंदादि ऋद्धि है, उसमें विकल्प करे कि मेरेमें आनंद है, ऐसे विकल्पमें नहीं रुकता. विकल्प है वल राग है, अहर है. लगवान निर्विकल्प अमृतका घर है. आलाला..!

‘ऐसा निस्पृह हो जाता है कि मुझे मेरा अस्तित्व ही थालिये.’ है? धर्मी तो ऐसा निस्पृह हो जाता है (कि), अपना अस्तित्व, अपनी मौजूदगी थीज जो है, अनादिअनंत निरावरण, सकल निरावरण अनादिअनंत प्रलु अंदर है, वल थालिये. उसके सिवा कुछ नहीं थालिये. त्रिकाल निरावरण है. द्रव्य है वल त्रिकाल निरावरण है. आवरण तो पर्यायमें निमित्त है. द्रव्य तो त्रिकाल निरावरण है. विशेष कहेंगे...

(श्रोता :- प्रमाण वचन गुरुदेव!)